REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 10 | ISSUE - 10 | JULY - 2021

गोपाल कृष्ण शर्मा 'फिरोजपुरी' की कहानियों का अनुशीलन

पिंकी दहिया
शोध छात्रा, पीएच.डी. (हिन्दी) दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, धारवाड़।

पंजाब के आधुनिक हिन्दी साहित्य में गोपालकृष्ण शर्मा का स्थान अग्रणी रहा है। अपने कहानी–साहित्य में इन्होंने मध्यवर्गीय समाज, में नारी चेतना एवं शहरी जीवन जी रहे मध्यवर्गीय परिवारों के जीवन का यथार्थ चित्रांकन किया है। इसमें प्रेम के विविधरूपों का भी चित्रण हुआ है, जिसमें जीवन और जगत के अनेक अनछूए पहलू उद्घाटित होते हैं। इसके अतिरिक्त लेखक को इन कहानियों द्वारा सामाजिक विकृतियों, परम्परागत रूढ़ियों और जिजिविषा के इच्छुक व्यक्तियों की मर्मव्यथा को प्रस्तुत करने में विशेष सफलता मिली है। प्रमुख रूप से इनकी कहानियाँ सीधी और सपाट हैं, उनमें न कोई बुझोवल है, और न ही अभिव्यक्ति की उलझन है।

'श्यामली' कहानी–संग्रह 'श्यामली' गोपाल कृष्ण शर्मा जी का प्रथम कहानी–संग्रह है। इस संग्रह में कुल चौदह कहानियाँ हैं। उनकी कहानी श्यामली को साहित्य सभा द्वारा आयोजित कहानी प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान मिला जिसके फलस्वरूप उनका लेखन कार्य निरन्तर गतिशील होता गया। प्रस्तुत कहानी–संग्रह की महत्वपूर्ण कहानियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है– प्रथम कहानी 'श्यामली' में स्त्री की बाहरी सुंदरता को नही बल्कि उसकी आन्तरिक सुंदरता को महत्व दिया गया है।

'भ्रमजाल' कहानी मे वर्षों से चले आ रहे अंध–विश्वास, धार्मिक आडम्बरों और सामाजिक कुरीतियों पर कड़ा प्रहार करते हुए दिखाई देते हैं।

'दूसरी मौत' कहानी के माध्यम से कहानीकार ने यह बताना चाहा है कि किस तरह पैसों के लालच में पडकर लोग अपने रिश्ते–नातों को भी दाँव पर लगा देते हैं। **'अनोखा नाम'** में यह बताना चाहा है कि व्यक्ति का नाम चाहे कुछ भी हो मनुष्य सार्थक अपने कर्मों से बनता है न कि नाम से।

'अहसास' में वाणी की मधुरता और मिठास पर महत्व दिया गया है। मनुष्य अपनी वाणी से दुश्मन को मित्र और मित्र को दुश्मन भी बना सकता है। कहानी का प्रमुख पात्र रमण अपनी इसी कला से एक बड़ा व्यक्ति बन जाता है। जिस व्यक्ति ने अपनी बेटी की शादी रमण से करने को इनकार किया था। वही व्यक्ति आज रमण के पास अपनी बेटी का रिश्ता लेकर आता है। 'प्यासे पर्वत नदियां' में सामाजिक रिश्तों पर व्यग्य किया है।

'मतिभ्रम' मे मनुष्य की धन के प्रति लालसा को व्यक्त किया है।

डॉ दर्शन त्रिपाठी 'श्यामली' कहानी–संग्रह के बारे में कहते हैं। इस कहानी–संग्रह की अधिकतर कहानियो में शर्मा जी रूढियों और आडम्बरों के प्रति अत्यन्त ही सरल ढंग से अपना क्षोभ और घृणा ही व्यक्त

नहीं करते बल्कि इस समाज के वर्तमान ढांचे व्यग्य करते हैं। वहाँ अप्रत्यक्ष रूप से उस पर वज्र प्रहार भी करते दिखाई देते हैं।''[1]

'कल से आज तक' इसका प्रकाशन सन् 1997 में हुआ। यह इनका द्वितीय कहानी–संग्रह है। इसमे लगभग अठारह कहानियां हैं। डॉ मुरारि लाल शर्मा जी इस कहानी–संग्रह के बारे में लिखते हैं, गोपाल कृष्ण शर्मा का यह द्वितीय कहानी–संग्रह 'कल से आज तक' जीवन के विविध प्रसंगों के आधार पर लिखी गई अनेक घटनाओं एवं परिस्थितियों का जीता जागता एलबम है।''[2]

गोपाल कृष्ण शर्मा के इस संग्रह मे संकलित कहानियों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

'लेना देना' कहानी में समाज के परोहित वर्ग पर व्यग्य करने के साथ–साथ आर्थिक अभावों एवं विवशता की पीड़ा झेलते हुए युवक की दयनीय दशा का वर्णन किया गया है।

'प्रतिकार' और 'चोट' प्रेम कहानियां हैं।

'मदारी' कहानी का नायक छनकू अपनी रोजी रोटी तथा परिवार का पेट पालने के लिए जगह–जगह तमाशा करता है। उसकी पत्नी छमिया गर्भवती होते हुए भी पेट की भूख शांत करने के लिए रस्सी पर चलती है और लोगों के तीखे व्यग्य वाणों के प्रहार को सहती है।

'खून की रोटी' का नायक दो टुकड़े रोटी के लिए पल–पल संघर्ष करता है। वह अपनी मां की बीमारी के इलाज के लिए पैसे जुटाने के लिए नसबंदी कराने को विवश हो जाता है। 'अँधेरे की ओर' पारिवारिक संबंधों के विघटन की कहानी है।

'मृगमरीचिका' में भौतिकतावादी चकाचौंध और विलासिता की ओर मुखर नारी का भयानक रूप दिखाया है। ''चौखट'' में संयुक्त परिवार के विघटन की स्थिति को दर्शाया गया है। यह कहानी मध्यवर्गीय संयुक्त परिवार कहानी है। परिवार में रोजगार और बेरोजगार सदस्यों के बीच हो रहे लड़ाई झगड़े को दिखाया गया है।

'चित्रकार' सोनिया और संजीव की प्रेम कहानी है।

'तडप'एक डॉक्टर और उसके रोगी की प्रेम कहानी है।

'जोखिम' प्रशांत के पुत्र छोटू की शरारतों भरी कहानी है। 'पतिदेव' सुनाली और प्रतीक की प्रेम कहानी है।

'सबक' कहानी दहेज के लोभियों के विरूद्ध आवाज उठाने वाली साहसी लड़की की कहानी है।

'त्याग' कहानी निम्नजाति के विवेक और उच्च जाति की लता की असफल प्रेम कहानी है। यह कहानी प्रेरणा से भरपूर है। **'कल से आज तक'** में जिस व्यक्ति ने बीते कल मे विवश और निर्धन संजू की सहायता की थी आज उसी व्यक्ति को संजू डांट फटकार कर बाहर निकाल देता है। यह कहानी मनुष्य के स्वार्थीपन और एहसान फरामोश प्रवृति पर प्रहार करती है। 'द्रोपदी'मे नारी की विवशता और उसकी दयनीय स्थिति का वर्णन है। जिसे दो टुकड़े रोटी के लिए गली–गली में मूर्तियां बेचनी पड़ती हैं। समाज के कुछ हवशी पुरूषों से वह स्वयं को बचा नही पाती और उनकी हवस का शिकार बन जाती है।[3]

इस प्रकार गोपाल कृष्ण शर्मा ने अपने इस कहानी–संग्रह मे गरीबी, बेरोजगारी, विवशता, पीड़ा, टूटते–बिखरते पारिवारिक संबंधो एवं दाम्पत्य संबंधो को रेखांकित किया है। इन्होंने इस कहानी–संग्रह में विभिन्न विषयों पर कहानियां लिखी हैं जिनका उद्देश्य समाज को जागृत करना है।

मंगलसूत्र

यह गोपाल कृष्ण शर्मा का तृतीय कहनी संग्रह है जो सन् 2000 में प्रकाशित हुआ। यह चौबीस कहानियों का संग्रह है। 'मंगलसूत्र' कहानी सग्रह की कहानियो के बारे में डॉ हरमहेन्द्र सिंह बेदी लिखते हैं –

1. उद्धत, दर्शन त्रिपाठी, गोपाल और उनकी कहानियां, गोपाल कृष्ण शर्मा, श्यामली, जालन्धर : दीपक पब्लिशर्ज, 1988), पृ.6.
2. उद्धत मुरारीलाल शर्मा, गोपाल कृष्ण शर्मा फिरोजपुरी, समीक्षकों की दृष्टि में, गोपाल कृष्ण शर्मा, मौसम बंदलते रहे, दिल्लीः नरेश प्रशसन, 2005), पृ.9.
3. उद्धृत, हरमहेन्द्र सिंह बेदी, पंजाब की हिन्दी कहानी का एक और सफर, गोपाल कृष्ण शर्मा, मंगलसूत्र, गाजियाबादः अमर प्रकाशन, 2000), पृ.5

''समकालीन कहानी की एक पहचान यह भी है कि यह तटस्थ होकर स्थितियों का नग्न चित्रण कर देती है। ये कहानियां सामाजिक यथार्थ की इस शर्त को बखूबी पेश करने में समर्थ है।''[4]

यह कहानी–संग्रह समाज के विभिन्न विषयों से संबंधित है। 'चालबाज' कहानी का नायक नितिन लॉटरी के चक्कर में सब कुछ लुटाता चला गया। अंत में चिन्तामुक्त होने के लिए उसने शराब और झूठ का सहारा लिया।

''मंगलसूत्र' में दर्शाया गया है कि किस तरह लोग झूठ बोलकर रिश्ते करवा देते हैं और बाद में लड़की को सारी उम्र उसका भुगतान करना पड़ता है। इस कहानी की नायिक पद्मा के साथ भी ऐसा ही कुछ होता है। उसके पिता के साथ झूठ बोलकर उसका रिश्ता एक शराबी के साथ कर दिया जाता है। ज्यादा शराब पीने से उसकी मृत्यु हो जाती है। परन्तु पद्मा परिस्थितियों के आगे अपना सर नहीं झुकाती बल्कि डटकर उसका सामना करती है।

'साहस' कहानी ऐसे पिता की है अपनी जवान बेटी के छोटे कद के कारण विवाह में आने वाली कठिनाईयों का सामना करता है। साथ ही इसमें जात पात पर भी कड़ा प्रहार किया गया है।

'भागीदार' पारिवारिक रिश्तो की उथल–पुथल और जायदाद के बंटवारे को लेकर ईर्ष्या, कलह, प्रकट की गई है।

'कुर्सी' कहानी का नायक दौलत के नशे में अपनी पत्नी की हत्या कर देता है। परन्तु अंत में उसे पत्नी की हत्या के जुर्म में उम्र कैद की सजा होती है।

'चुनाव से पहले' इस कहानी में राज नेताओं की स्वार्थी प्रवृति पर, मानसिकता पर करारा व्यग्य किया गया है। **'अलग अलग रास्ते'** पारिवारिक संबंधो पर आधारित है। किस प्रकार पारिवारिक रिश्तों का विघटन होता है और संबंधो के इस बदलाव ने व्यक्ति को कितना स्वार्थी बना दिया है।

'बिना बाग का माली' कहानी में लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि किस तरह इन्सान अपनी औलाद को पाल–पोसकर बड़ा करता है और बाद में वही औलाद उसे बेसहारा छोड़ देती है।

'रो पड़ा कानून' में नारी पर होने वाले अत्याचारों को वर्णित किया गया है। कहानी की नायिका सविता को कानून के रखवाले डाक्टर, पुलिस, भ्रष्ट नेता अपनी हवस का शिकार बनाना चाहते हैं। समाज के रक्षक ही भक्षक बन जाते है। हर कोई अबला लड़की का फायदा उठाना चाहता है। समाज मे नारी कितनी असुरक्षित है, इसका वर्णन इस कहानी में किया गया है।

'दोस्त की कोतवाली' में एक मित्र का स्वार्थीपन, लालच दिखाया गया है। साजन जो अपने मित्र के पास दिल्ली जाता है परन्तु उसका मित्र उसे पहचानने से भी इन्कार कर देता है। **'पुत्री'** में एक बेटी द्वारा अपने पिता के प्रति अमिट सेवाभाव प्रकट किया गया है। वह अपना पूरा जीवन अपने पिता की सेवा में लगा देती है और समाज के सामने एक आदर्श स्थापित करती है।

'सहारा' भी पारिवारिक संबंधों पर आधारित कहानी है। 'आखिरी चीख' में आतंकवादियों की दहशत, बढ़ते घुसपैठ के कारण गाँव वालों मे उत्पन्न भय की स्थिति का वर्णन किया गया है। **'लकड़ी का पुल'** कहानी मे लेखक ने बताया है कि सामाजिक रिश्ते स्वार्थ पर टिके हैं। इस कहानी की नायिका अपने बेटे को नौकरी दिलाने के लिए पति को मरने के लिए मजबूर कर देती है।[5]

'तांत्रिक' में लोगों द्वारा तांत्रिकों पर किए गये अंध विश्वास पर प्रहार किया गया है साथ ही लोगो को जागरूक करने का प्रयास किया गया है।

'कुछ खोया कुछ पाया', 'सन्यासिन' और 'मसीहो' प्रेम कहानियां हैं।

'घाव' मे पारिवारिक संबंधो का विघटन दिखाया गया है।

'ग्रीटिंग कार्ड' में महंगाई का चित्रण किया गया है।

'सिमटते साये' एक प्रोफेसर और एक छात्रा के प्रेम संबंधो पर आधारित है।

'घुसपैठ', 'सिरफिरा' और 'वह लौट आई' कहानियां भी सामाजिक विषयों पर आधारित हैं।

अंत में कहा जा सकता है कि प्रस्तुत कहानी–संग्रह में समाज के विभिन्न विषयों और समस्याओं को लिया गया है।

---

4. हिन्दी लेखक कोश, ट्रक डाइवर, कहानी, पृ.104.
5. गोपाल कृष्ण शर्मा, मंगलसूत्र, गाजियाबादः अमर प्रकाशन

दौड़

यह संग्रह सन् 2001 ई. में प्रकाशित हुआ। यह गोपाल कृष्ण शर्मा का चतुर्थ कहानी–संग्रह है। इसमें बीस कहानियां हैं।

'छापामार' कहानी में ऐसे भ्रष्ट और रिश्वतखोर कर्मचारियों पर प्रहार किया गया है जो लोगों को लूटने में लगे रहते हैं।

'कोमल कृतिका' कहानी के माध्यम से लेखक ने बताना चाहा है कि अगर लड़की चाहे तो क्या नहीं कर सकती। कहानी की नायिका कृतिका पति को छोड़ने का पच्चीस हजार लेती है।

'तुम्हें नहीं छोड़ेंगी' मे एक राजनीतिज्ञ द्वारा अपनी ही विरादरी की लडकी के साथ बलात्कार किया जाता है। बाद में वह लड़की उसी के साथ शादी करके अपना पश्चाताप कर लेती है। 'चाह' में पिता को इस बात से सन्तोष है कि कम से कम अपनी विकलांग बेटी के लिए उसके पास जमीन तो हैं। 'अकेला' मे यह बताने का प्रयत्न किया गया है कि एक इन्सान अपना सुझाव भी नहीं दे सकता।

'पिया गये परदेस' का नायक विदेश से आता है और शादी रचा कर वापिस चला जाता है फिर लौट कर नहीं आता। उसकी पत्नी न विधवा रह जाती है, न सुहागिन।

'हिदायतनामा' में बताया गया है कि गाँव की बेटी पूरे गाँव की बेटी है और गाँव का दामाद पूरे गांव का दामाद है। 'ट्रांसफर' मे शान्ति पति का ट्रांसफर न होने के कारण खेतों मे सारा काम संभालती है।

हरे भरे शहर में

यह गोपाल कृष्ण शर्मा का छठा कहानी–संग्रह है। इसमें लगभग तेरह कहानियां हैं। अपने इस कहानी–संग्रह में इन्होंने समाज के विभिन्न विषयों को उठाया है। इनकी कहानियों का विषय जाना–पहचाना है। इनकी कहानियों के पात्र दूर–दराज के नहीं, इर्द–गिर्द मंडराने वाले जीवन्त प्राणी हैं। आर्थिक संताप भोगते, पुरूष, बूढे और बच्चे है। ऐश्वर्य मे डूबे कुलीन लोग हैं और वेदना की चक्की मे पिसती नारी इन कहानियों की नायिका है।''[6]

'जन्म कुण्डली' में धार्मिक अंधविश्वासों पर करारा व्यंग्य किया गया है।

'राजीनामा' में धार्मिक आडम्बरों और अंधविश्वास पर चोट की गई है। साथ ही पुलिस प्रशासन मे बढ़ती रिश्वत खोरी, भ्रष्टाचार का नम्न चित्रण प्रस्तुत किया हैं।

'वह' यह एक प्रेम कहानी है।

'जीजा जी' कहानी में शादी–ब्याह का वातावरण दिखाया गया है।

'हरे भरे शहर में' नायिका हिमानी की बहादुरी और निडरता का परिचय दिया गया है।

'बेचारा' कहानी में मानवीय रिश्तों की उथल–पुथल दिखाई गई है।

'गुर्दे' कहानी भी पारिवारिक संबंधो के विघटन पर आधारित है।

साथ ही इस कहानी में नौकरी के लिए रिश्वत लेते मन्त्रियो का भण्डा–फोड किया गया है। कहानी का नायक अपने बेटे को नौकरी लगवाने के लिए रिश्वत के लिए पैसे इकट्ठे करने के लिए अपने गुर्दे बेच देता है। 'आधा आदमी' आदमी के अस्तित्व पर व्यंग्य करती है। 'ठेकेदार' मे धर्म के नाम पर लोगों को ठगने वाले संत–महात्माओं को बेनकाब किया है।

'दिशा' कहानी की नायिका दिशा अपने असहाय माता–पिता का पालन पोषण करने के लिए गूंगी होने का नाटक करती है ताकि कोई उससे शादी न करे और वह जिन्दगी भर मां–बाप की सेवा करती रहे।

'अपने कटघरे में' यह कहानी उच्च पद पर आसीन अधिकारियों की मनमानियों, कटु व्यवहार और झूठे अनुशासन पर व्यंग्य करती है। कहानी की नायिका अनुराधा द्वारा नारी की बहादुरी का परिचय भी दिया है।

'काली लड़की' कहानी में दर्शाया गया है कि लड़की के रंग रूप को नहीं बल्कि उसके गुणों को महत्व देना चाहिए।

'हेलो हैंलो' कहानी मे पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड में बढ़ती नकल की प्रवृति पर वज्र प्रहार किया गया है। इस प्रकार यह कहानी–संग्रह सामाजिक कुरीतियों, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी पर प्रहार करता है।

---

[6]. गोपाल कृष्णा शर्मा, हरे भरे शहर में, दिल्ली: कल्पना बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2007), फ्लेप से

मौसम बदलते रहे

यह सन् 2005 में प्रकाशित हुआ है। इसमें लगभग दस कहानियां हैं। यह गोपाल कृष्ण शर्मा द्वारा रचित पंचम कहानी–संग्रह है। डॉ सुभाष रस्तोगी इस संग्रह की कहानियों के बारे मे लिखते हैं– ''इन कहानियो का कथ्य जाना पहचाना है और हमारे सामने दुनिया के उस हिस्से को लाता है जो घिसटते हुए कीड़े–मकौड़े की तरह जीने के लिए अभिशप्त है।''[7] 'अग्निवाह' कहानी मे साम्प्रदायिक दंगों को वर्णित किया गया है। हिन्दू और मुस्लिम एक दूसरे की जान के प्यासे हो जाते हैं।

'मौसम बदलते रहे' कहानी ऐसी लड़की की है जो सब प्रकार की सुख सुविधाओं के होते हुए भी खुश नहीं है। कहानी की नायिका दिव्या एक आई.ए.एस. की पत्नी है, उसके पास सुख–सुविधाएं उपलब्ध होते हुए भी वह अपने आपको एक कैदी समझती है।

''दुर्योधन जिन्दा है' कहानी मे भ्रष्ट राजनेताओं पर करारा व्यंग्य किया गया है कि वे किस तरह इन्सान की लाशों का सौदा करने से भी पीछे नहीं हटते।

'अकाण्ड ताण्डव' और 'नींद खुली है' में पुलिस द्वारा किए अत्याचार और भ्रष्टाचार को वर्णित किया गया है।

'खुशबू मिट्टी की' कहानी में देश भक्ति को महत्व दिया गया है। अंत में यह कहा जा सकता है कि गोपाल कृष्णा शर्मा जी ने अपने कथा–साहित्य मे मध्य वर्ग की विभिन्न समस्याओ को यथार्थ ढंग से चित्रित करने का प्रयत्न किया है।

अंधेरी सुरंग

यह गोपाल कृष्ण शर्मा 'फिरोजपुरी' द्वारा रचित सातवां कहानी–संग्रह हैं। इसमें लगभग तेरह कहानियां हैं। यह कहानी–संग्रह जीवन की विभिन्न घटनाओं पर आधारित है। यह कहानी–संग्रह मनुष्य की, समाज की, देश की परिस्थितियों का जीता जागता, चित्र पेश करता है। 'उडान', कौन है कसूरवार, 'बोझ की गठरी, 'मैं आऊँगा नाजिमा', 'शंकाग्रस्त, 'अपने लोग', 'अंधेरी सुरंग', गति चक्र', 'हुनर की संग, 'मुशायरा, 'आड़ी तिरछी जिन्दगी', सौदेबाज 'धारा के साथ' इस संग्रह में समिलित हैं।

'उड़ान' कहानी के माध्यम से कहानीकार ने यह समझाने का प्रयत्न किया है कि माता–पिता किस प्रकार जी–जान लगाकर, मेहनत करके अपने बच्चों को पढ़ाते हैं परन्तु बुढापे मे वही बच्चे उनको छोड कर चले जाते हैं।

'कौन है कसूरवार' कहानी एक डॉक्टर की है। कहानी का नायक डॉक्टर संकेत बहुत ईमानदार और जरूरतमंदो की सहायता करने मे गर्व महसूस करता है परन्तु एक गर्भवती स्त्री को देरी से अस्पताल लाने से उसकी मृत्यु हो जाती है जिसके लिए डॉकटर संकेत को जिम्मेदार ठहराया गया परन्तु अंत में फैसला डाक्टर के पक्ष में होता है।

'बोझ की गठरी' मे सामाजिक रिश्तों का विघटन दिखाया गया है। आज मनुष्य किस हद तक गिर गया है कि वह किसी की हत्या करने से भी पीछे नहीं हटता।

''मैं आऊँगा नाजिमा' कहानी जम्मू–कश्मीर के द्रास इलाके में रहने वाली नाजिमा की है जो आतंकवादियों की हवस का शिकार बन जाती है। साथ ही भूकम्प पीडितों की सहायता के लिए भारतीय सेना द्वारा प्रयत्न दिखाये गये हैं। भारतीय सैनिक दलेर सिंह और नाजिमा के मध्य उत्पन्न अथाह प्रेम भी कहानी की ओर अधिक आकर्षित करता है। 'शंकाग्रस्त' कहानी के शीर्षक से ही कहानी की विषय वस्तु का ज्ञान होता है। यह कहानी है एक ऐसे युवक की जो वेकार घूमता रहता है जिसके पास कोई नौकरी नही है। रात को शराब मे डूबा रहता है क्योंकि उसकी पत्नी उसे छोड़ कर चली गई है। इस कहानी मे दर्शाया गया है कि शंका दाम्पत्य जीवन को बहुत प्रभावित करती है। बात तलाक तक पहुँच सकती है। पति–पत्नी का रिश्ता विश्वास की बुनियाद पर टिका होता है। अगर इसमें थोड़ा–सा भी शक उत्पन्न हो जाये तो दाम्पत्य जीवन उथल–पुथल कर रह जाता है।

---

[7]. उद्धृत सुभाष रस्तोगी, गोपाल कृष्ण शर्मा, फिरोजपुरी, समीक्षा की दृष्टि में', गोपाल कृष्ण शर्मा, मौसम बदलते रहे, दिल्ली : नरेश प्रकाशन, 2005), पृ.10.

''अपने लोग' कहानी ऐसे दम्पति की है जो समाज में अपनी झूठी इज्जत, समाज में झूठी शानो–शौकत, रूतबा बनाए रखने के लिए इस हद तक गिर जाते हैं कि वह अपने बच्चों की हत्या करने से भी पीछे नही हटते। कहानी में जातिवाद और धार्मिक अन्धविश्वास पर भी प्रहार किया गया है। यह एक मनोवैज्ञानिक शैली मे लिखी गई कहानी है।

'अंधेरी सुरंग' कहानी आधुनिकता के रंग मे रंगी हुई एक एक युवती की कहानी है जिसका जीवन अकेलेपन, कुंठा, निराशा से भर गया है। कहानी की नायिका परिधि आधुनिकता के रंग मे पूरी तरह रंग चुकी है। वह अपने जीवन में हर वक्त परिवर्तन चाहती है। वह किसी एक व्यक्ति की जीवन संगनी बनकर नही रहना चाहती है। इसलिए वह कन्ट्रेक्ट मैरिज को अपना हथियार बनाती है। वह कन्ट्रेक्ट पर मौज करती थी पैसे की भूख, अंधी कामुकता खोखला अहंकार काम वासना में डूबी हुई परिधि अंत में एड्स की शिकार हो जाती है।

'गतिचक्र' कहानी में राजनीतिक भ्रष्टाचार, अनुसूचित जातियो को मिल रहे आरक्षण का विरोध किया गया है क्योंकि अनुसूचित जातियो की आड़ मे उन्हीं लोगों के बच्चों को लाभ मिल रहा था जिनके मां बाप उँचे पदों पर आसीन होते हैं।

'हुनर के संग' कहानी एक पारिवारिक कहानी है कहानी का नायक कल्लू बहुत ही मेहनती और ईमानदार है जो गांव मे मेहनत–मजदूरी करता है परन्तु बाद मे शहर जाकर उसने अपने परिश्रम और लगन के बलबूते पर जल्दी ही सफलता प्राप्त कर ली। यहाँ आकर उसे तमिल युवती से प्रेम हो जाता है। और दोनो शादी करके खुशी–खुशी गांव वापिस चले जाते हैं।

'मुशायरा' एक व्यंग्यात्मक शैली मे लिखी गई कहानी है।

इस में कवियों द्वारा मुशायरे के आयोजन के नाम पर अनैतिकता दिखाई गई है।

'आडी तिरछी जिन्दगी' मे दर्शाया गया है कि जिन्दगी क्या–क्या रंग दिखाती है यह रंक से राजा और राजा को रंक बना देती है। यही इस कहानी केन्द्रीय भाव है।

'सौदेबाज' यह कहानी एक लोभी नत्थू राम की है। जो एक चपड़ासी था परन्तु उसने मन्दिर में पुजारी का काम भी संभालता है। वह लोगों को लूटता है। विवाह, शादियों, हवन, कर्मकाण्ड आदि में उसे खूब कमाई होती है। उसका एक बेटा है जो मैट्रिक पास है। वह अपने बेटे के लिए रिश्ते नहीं बल्कि उसकी सौदेबाजी करता है। वह दहेज का लोभी है। जिसके कारण वह हर रिश्ते को ठुकरा देता है। अंत में उसका बेटा कुंवारा ही रह जाता है।

'धारा के साथ' कहानी समाज के दिखावेपन की प्रवृति पर व्यंग्य करती है।[8]

इस प्रकार गोपाल कृष्ण शर्मा की कहानियों का विषय पारिवारिकता और सामाजिकता पर अधारित है। इन्होंने इस कहानी–संग्रह मे भ्रष्टाचार, रिश्तों का विखराव, दहेज की समस्या, आतंकवाद को समाज के सामने प्रत्यक्ष किया है। इन पर करारी चोट की है।

'मोम के रिश्ते'

गोपाल कृष्ण शर्मा के इस कहानी–संग्रह मे लगभग बारह कहानियां है जो क्रमशः हैं – 'सपनो के धरातल' पर पत्थर के आईने, काश! 'एक और लड़की जन्म **लेती', 'जाग उठी है नारी, 'बापू की छड़ी', 'मोम के रिश्ते', 'इन्साफ का तराजू' मत जइयो परदेस', 'मौत के साये में' 'जीवन की पटरी पर 'रेलगाड़ी' 'मौत का पिंजरा'**, और **'हवामहल के पास'** है।

'सपनों के धरातल पर' कहानी आधुनिकता बोध पर आधारित है। हमारा समाज किस प्रकार पश्चिम सभ्यता के देखा–देखी में अपने संस्कार भूल रहा है। मूल्यों का विघटन हो रहा है। समाज में समलैंगिकता', लिव इन रिलेश्नशिप' आदि समाजिक कुरीतियों को अपनी कहानी का मुख्य विषय बनाया गया है।

'पत्थर के आइने' यह भी आधुनिकता पर आधारित है कि आधुनिकता ने मनुष्य के विचारों को किस हद तक प्रभावित किया है। आज का मनुष्य प्राचीन मूल्यों, विचारों, संबंधों, रूढिगत विचारों को त्याग कर उनका रूप बदल कर नये मूल्यों की स्थापना करता है। परन्तु अंत में उसे असफलता का सामना करना पड़ता है। उनका जीवन कुंठा, निराशा और अकेलेपन से भर जाता है।

[8]. अंधेरी सुरंग.

'काश! एक और लड़की जन्म लेती' में करमू जो पेशे से चपरासी है के माध्यम से यह सन्देश देने का प्रत्यन किया है कि किस तरह एक चपरासी अपने बच्चों का पालन पोषण करता है। उनको उच्च शिक्षा देता है और नौकरी करने के काबिल बनाता है और उनकी शादी की, परन्तु उसकी बहू को गांव की सभ्यता रास न आई और वह बेटा–बहू घर छोड़ कर चले गये। करमू की बेटी प्रिया ने अपने माता पिता को हौंसला दिया। उसने स्कूल और कॉलेज में हमेशा प्रथम स्थान हासिल किया। अंत में उसकी मेहनत रंग लाई और वह आइ.ए. एस ऑफिसर की परीक्षा में भी प्रथम स्थान पर आई। करमू और यह देख कर विमला की मानो जवानी लौट आई हो।

जाग उठी है नारी' कहानी आज की नारी की है जो शिक्षित है संस्कारी है, नौकरीपेशा है और पुरूष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करती हैं परन्तु फिर भी उसकी स्थिति मे कोई परिवर्तन नही आया है। आज स्त्रियों को बाहर भी काम करना पडता है साथ ही घर का भी सारा काम–काज देखना पड़ता है। वह अपना हर दायित्व अच्छी तरह निभा रही है। कहानी की नायिका भूमि पेशे से एक अध्यापिका है उसका पति शोभन बैंक में एक अधिकारी है। परन्तु वह अपनी मां का पक्ष लेता है और भूमि को उसके मायके आने जाने साथ ही बूढे माता–पिता को आर्थिक सहायता देने से उसके साथ बहुत बुरा व्यवहार करते हैं। अंत में भूमि शोभन से अलग रहने का फैसला करती है। अंत में इस पर अदालत की मोहर लग जाती है।

'बापू की छड़ी' में पीढ़ियों के अन्तराल को दिखाया है। साथ ही पुराने समय और आधुनिक समय की तुलना की गई है। आज कल बच्चे आधुनिकता के रंग में पूरी तरह रंग चुके हैं और अपने माता–पिता की कोई परवाह नहीं करते। जबकि पुराने समय में बच्चे बहुत आज्ञाकारी और माता–पिता की सेवा करने वाले होते थे।

'मोम के रिश्ते' में पारिवारिक उथल–पुथल दिखाई गई है। साथ ही आधुनिक समाज की दिखावेपन की प्रवृत्ति, खोखलें रीतिरिवाज रस्मों पर व्यंग्य किया गया है।

'इन्साफ का तराजू' राजनीतिक विषय पर आधारित है। कहानी अपने नाम को बिल्कुल सार्थक सिद्ध करती है। कहानी की नायिका कविता चुनाव जीतने पर अपना कर्तव्य बखूबी निभाती है। वह इन्साफ, कर्तव्य, न्याय आदि का ही पक्ष लेती है। 'मौत के साये में' कहानी में आंतकवाद, घुसपैठ, हिन्दू–मुस्लिम लड़ाई–झगड़ों के कारण गांव वालों मे उत्पन्न भय, दहशत को दिखाया गया है।

'जीवन की पटरी रेलगाड़ी' एक प्रेम कहानी है।

'मौत का पिंजरा' कहानी में दिखाया गया है कि लोग किस प्रकार झूठ बोल कर झूठे वायदे करके रिश्ते करवा देते हैं और जिसका भुगतान लड़की को पूरी उम्र भर करना पडता है। यही हुआ कहानी की नायिका सुनामी के साथ जिसने शादी को लेकर बहुत सपने देखे थे। परन्तु वह सब टूट गये। दहेज के लोभी ससुराल वालों ने उस पर बहुत अत्याचार किये। अंत में उसने जंहर की शीशी पी कर अपनी जीवन लीला ही समाप्त कर दी। 'हवामहल के पास' कहानी मंगतराम की है जो जीवन से संघर्ष करता करता बूढा हो गया। जवानी का जोश खत्म हो गया। वह स्वंय के लिए सहारा ढूँढता था परन्तु उसे कहीं कोई सहारा नहीं मिलता। गोपाल कृष्ण शर्मा अपने कहानी–संग्रहों में वास्तविक जीवन का, समाज का गुप्त रहस्य प्रत्यक्ष किया है। इन्होनें अपनी साफ और स्पष्ट दृष्टि से समाज की कुरीतियों, अंधविश्वासों, बुराईयों के प्रति लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया है। इनकी कहानियों का मुख्य आधार मध्यवर्ग है। उन्होंने मध्यवर्ग की इस विशिष्ट वर्ग की विभिन्न समस्याओं के यथार्थ के साथ चित्रित करने का प्रयास किया है। मध्यम वर्ग में व्याप्त कुठों, घुटन, पीड़ा, बिखराव, झूठी मान्यतायों को आधार बनाकर अनेक कहानियां लिखी हैं। इन्होंने अपनी कहानियों के द्वारा पूरे भारतीय समाज की तस्वीर प्रस्तुत की है। इन्होंने सभी कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन से संबंधित कृत्रिमता, खोखलेपन को उभारने के साथ साथ मध्यम वर्ग की विविध समस्याओं को भी उजागर करने का प्रयास किया है।